होरी पचीसी

चौधरी केदार नाथ ठाकुर

सिंहवाड़ स्टेट
पो० सिंहवाड़
दरभंगा

होरी पचीसी

(राम जानकीक पचीस गोट)

बसन्त पञ्चमी, संवत २००६

१९ जनवरा १९५३

लेखक चौधरी यदुनाथ ठाकुर

दू कथा

उपस्थित अछि हमर ई अभिनव कृति । 'होरी पचीसी' क प्रत्येक गीत भिन्न राग ताल में आवद्ध अछि । स्वर, ताल, राग एवं रागिणीक जिम्मा छैन्ह गायक समाजक । हमरा ओहि सँ कोन प्रयोजन ? हम त केवल अपन भाव कैं छन्दोबद्ध कैल अछि । सन्तोष एतबे अछि जे होरी खेलयबाक स्थान अछि मिथिलाक पवित्र भूमि और खेलाइत छथि जगज्जननी जानकी एवं जगत्पिता राम । तखन गुण-दोषक विवेचने किएक ? राम-नाम चीनीक लड्डू थिक, टेढो मधुर सोझो मधुर ।

यादव

प्रकाशक
चौधरी श्री कौशल किशोर ठाकुर
सिंहवाड़ स्टेट पो० सिहवाड़
दरभंगा

(१)

हटु छाड़ू कर सिय अति सुकुमारी रे ।
चूड़ी टूटि चुभि गेल, देखू धनुधारी रे ।।१।।

वलय कगन टुटि, मोतीलर टुटलई ।
गारी पढ़त सभ, मिथिलाक नारी रे ।।२।।

विनय विनती हरि, कान नहिं धारथि ।
"यादव" चरण धरि, गेलौं हम हारी रे ।।३।।

(२)

खेलय जाथि रे कुमरि, रंग राम सँ लजित ।
संग शोभामयि सखिगण रतन सजित ।।१।।

निरखथि जनक सुनयना निरखथि ।
निरखथि पुरके बजित वेबजित ।।२।।

शोभा सुभग सखीगण निरखथि ।
"यादव" ललित कलित आ चकित ।।३।।

(३)

झट अयलौं हैं दौड़ि ।
सुनि होरी के भनक ।।१।।
बीन मृदंग ढोल डफ बाजत ।
मन मोहय कठताला के टनक ।।२।।
राम निरखि मन ताप शमित भेल ।
श्रुति सियपद सुनि मधुर झनक ।।३।।
धन "यादव" धन मातु सुनयना ।
धन मिथिलापति नृपति जनक ।।४।।

(४)

होरी खेलू कुमरि मिथिला में सम्हरि ।
कोमल अति मिथिलेश कुमरि ।।१।।

पीताम्बर कटि पाँच टका केर ।
लाख हजारक लाल चुनरि ।।२।।

कहलहुँ देब नेह आँजुर भरि ।
कहि पुनि जायब लाल मुकरि ।।३।।
"यादव" राम सिया चरणक रज ।
पाबि भुवन दुहु गेल सुधरि ।।४।।

(५)

कुंकुम चला कय मारल ।
रघुवरजी प्रिय सियाके ।।१।।

अजगुत ई प्रियतम कैलनि
सीता सुनरि रंगि देलनि ।
की कहिअनु सियक पिया के
रघुवर प्रिय सिया के ।।२।।

हम दशरथ सुत के डटलहुँ
"यादव" लज्जित भय हँसलहुँ ।
अति शोभा जनक-धिया के
रघुवर प्रिय सिया के ।।३।।

(६)

गगरिया रे, ढारि देलथिन गगरिया ।
सुनरिया रे, भीजि गेलइ सुनरिया ।।१।।
प्रियतम रघुवर अति मन भावन
झगरिया रे, कोना करितहुँ झगरिया ।।२।।
"यादव" मुदित राम सिय खेलथि ।
नजरिया रे, लागि गेलइ नजरिया ।।३।।

(७)

राम सिया खेल करथि, जनकजीक आँगना ।।१।।

खनखन सरचाप बजत, झन झन झन कागना ।
रंग झरय झहर झहर, खेलथि दुहु फागना ।।२।।

समधी दशरथ सदेह, मिथिलाके पति विदेह ।
सजनी मिथिलेश कुमरि, रघुकुल मणि साजना ।।३।।

"यादव" हरषित सुरेश, वर्षा पुष्पक अशेष
गान गम्धर्व करथि, किन्नरके बाजना ।।४।।

(८)

मं मं मं मिथिलेश भवन खेलथि हरि होरी ।
सं सं सं सिय सरोज अजब मिलल जोरी ।।१।।
रं रं रं रंग झरय गं गं गं गुलाल उड़य ।
नं नं सभ नृत्य करय मिथिला-किशोरी ।।२।।

जं जं जं जनक नृपति कं कं कोशल-भुपाल ।
यं यं "यादव" नेहाल बिनवति कर जोरी ।।३।।

(९)

खेलैलौं फगुआ खेला रहल छी । खेला खेलाकय खेला रहल छी ।। १।।
राम रघुवर सिय सुहागिन, सिनेह सरीता बहा रहल छी ।।२।।
प्रमोद उपवन, बसन्त प्रमुदित, उमंग अनुपम देखा रहल छी ।।३।।
पूर्णिमा-निशि, हँसथि निशिपति, ज्योत्सना में नहा रहल छी ।। ४ ।।
राम-सिय-पद, मधुर "यादव" हृदय हँसि हँसि लगा रहल छी ।।५।।

(१०)

मारे पिचकारी सिया, राम के बदन पर ।।१।।
रंग रतनारी हाथ कनकक पिचकारी ।।
कनक पुतरि मारय अपन सजन पर ।।२।।
राम सन वर दुलहिन सिय सन नहिं ।
"यादव" कहथि विधि दोसर रचल नहिं ।। ३।।

(११)

निरखु सखि राम सियाजीक जोरी ।।१।।
श्याम राम अभिराम मनोहर , सिय सुन्दरि अति गोरी ।।२।।
अति उमंग आनन्द परस्पर, हँसि हँसि खेलथि होरी ।।३।।
"यादव" पुनि अवसर नहिं पायब, नेह सरस करु चोरी ।।४।।

(१२)

के अयलइ अए कतय कहाँ सँ ,
कोना खेलायब होरी रे ।।१।।
ई घनश्याम सिया विधु वदनी ,
कोना लगायब जोरी रे ।।२।।
ई स्नातक मुनिवर कौशिक के
ई मिथिलेश किशोरी रे ।।३।।
"यादव" श्याम राम नहिं मानथि
खेलथि जोराजोरी रे ।।४।।

(१३)

रचलनि राम सिय मुख रंग ।।१।।
नारि नर मिथिलाक नाचथि
सहित सरस उमंग ।।२।।
इन्द्र नाचथि शचिय नाचथि
पारवति अरधंग ।।३।।
यक्ष नाचति यक्षिनि लय
रतिक संग अनंग ।।४।।
चल अचल भूगोल नाचथि
प्रकृति पुरुषक संग ।।५।।
राम-सिय-पद हृदय "यादव"
राखु सतत अभंग ।।६।।

(१४)

सिय खेलथि फगुआ उमगि उमगि ।।१।।

सखिगण नाचथि झमकि झमकि।।२।।

सुरगण "यादव" सुमन लुटावथि ,
सुरनारी गावथि मुसकि मुसकि ।।३।।

(१५)

।। रसिया ब्रज के ।।

नागिन लहरय केश, सियाजीक नागिन लहरय केश ।।
होरी खेलथि राम जानकी पावन मिथिला देश ।।१।।

जनक नृपति तनया अलबेली, तन-दुति चमकय फूल चमेली ।।
मणिमय साजल वेश, सियाजीक नागिन लहरय केश ।।२।।

नाचथि चपला जकाँ सहेली, जनक नृपति के हँसैत हवेली ।।
"यादव" मुदित अशेष, सियाजीक नागिन लहरय केश ।।३।।

(१६)

हय की कहिअह बहिना
जखन दुलारी आली मिथिला सुकुमारी हय ...।

युवती सुहागिन नारी, हँसि ओंघरैली हय ...।
हँसय लागल सभ नारी, हय ...।।२।।

गगन गगनपति हँसथि बिहुँसिकय, हय... ।
हिमगिरि हँसथि त्रिपुरारी, हय ... ।।३।।

राम-सियाजीपद अति मन भावय, हय ... ।
"यादव" हृदय लेल धारी, हय .... ।।४।।

(१७)

(ब्रजक होरी)

मुनि कौशिक माला कथी लय जपथि ।।१।।
राम लखन सँग भरत शत्रुहन
होरी खेलथि रंग ढारी
मुनि मटकथि हँसि भाव बताबथि
होरी सखि होरी मधुर मिथिला के कहथि ।।२।।
मुसकथि राम सिया घोगटन तर ।
खिलखिलाथि सभ नारी ।
कामिनि रसमयि रास रचाबथि ।
होरी सखि होरी "यादव" चरण चखथि ।।३।।

(१८)

।। होरी महेशवाणी ।।

नहिं खेलब गे माय
सियाजीक फगुआ भेलइ बलाय ।।१।।

काल्हुक जनमल देल धकिआय
अपन चमकि कए गेली अगुआय ।।२।।

राम के अनूप रूप कहलो ने जाय
सिय के देखय लए मन अकुलाय ।।३।।

राममय अणु परमाणु ओ कहाय
"यादव" क मन बसु हुनक कहाय ।।४।।

(१९)

।। होरी डम्फक ।।

मिथिलापुर फाग मचय झमकय ।।

नव जलधर घनश्याम रामतन ।
दामिनि-छवि सिय तन चमकय ।। मि० ...।।१।।
श्याम तमाल रसाल रामतन ।
कनकलता सिय तन लचकय ।। मि० ... ।।२।।
"यादव" जगदाधार राम-सिय ।पाप-ताप निरखत घसकय ।।
मि० ... ।।३।।

(२०)

सिया सुन्दरि सँ खेलथि फाग, रघुवर नवे नवे ।।१।।
नव उमंग नव नागरि मुसकथि
अतिशय नव अनुराग, रघुवर नवे नवे ।।२।।

नव भूषण नव वसन मनोहर,
नव सरबस के त्याग, रघुवर नवे नवे ।।३।।

हमरो दिसि करुणाकर तकलनि,
धन "यादव" के भाग, रघुवर नवे नवे ।।४।।

(२१)

होरी जनक भवन में खेलथि अवधकुमार ।।१।।
लछुमन हाथ कनकघट रंगक, सिय कर अबिरक थार ।।२।।
रघुवर कर कनकक पिचकारी ऋतुपति छलाह सकार ।।३।।
"यादव" युगल चरण-छवि निरखथि मानव तन बलिहार ।।४।।

(२२)

सखि कथमपि नहिं खेलब रे, रघुपति संग फाग ।।
फाटि गेल पट आँचर रे, लागत तन दाग ।।१।।
बरसय रंग अबिर झर रे, नहि सूझय नैन ।।
मुख कुमकुम भरि देलनि रे, नहि निकसय बैन ।।२।।
डाँटथि रघुवर "यादव", कहि बहुविध गारि ।।
खिलखिल हँसथि सुहागिन रे, तन मन धन वारि ।।३।।

(२३)

रंग हम ढारब रघुवर सीता सुहागिनि संग ।।
रतन भवन में बैसल सीता, रघुपति ढारथि रंग ।।१।।
रंग झरब जे चरण कमल सौं से सिन्दूरक गंग ।।२।।
गारि सुनायब मातु कौशल्या, पीबि केसरिया भंग ।।३।।
"यादव" जीवन धन्य हैत जौं भरि लेताह भरि अंग ।।४।।

(२४)

झहरि झहरि झरि झरय रंग
सिय खलथि फगुआ राम संग ।।१।।
लहरि लहरि लड़ि लड़त नैन
कहि देलक नयना मनक बैन ।।२।।
चित चातक लेतइ कोना चैन
"यादव" जग में बैरी अनंग ।।३।।

(२५)

आब फागुन सजनि कोनाक बीतत ।।१।।
राम गेला सीतो लय गेला
आब कोना रंग साड़ी भीजत ।।२।।
राम सिया बिनु शून्य जनक गृह
"यादव" आस मिलन के उदित ।।३।।